

| | | | | | |
|----------------------------|------------|---|-------|---|-------|
| | | | | | |
| पञ्चमसत्रार्द्धम् | DSCC 11 | आशौचविचारः | | | |
| | | पाठ्यग्रन्थः – याज्ञवल्क्यस्मृतेः समिताक्षर-प्रायश्चित्ताध्यायः | | | |
| | | प्रस्तावना-सम्पूर्णे जगति जन्ममृत्यू निरन्तरं प्रचलतः । शिशौ जाते जननाशौचं व्यक्तेः मरणे च मरणाशौचं भारतीयपरम्परायां सर्वैः विचार्यते । तत्र केचन नियमाः अपि परिपाल्यन्ते । | | | |
| | | उद्देश्यः –आशौचे कर्तव्याकर्तव्यज्ञानं छात्राणां भवेदिति अस्त्युद्देश्यम् । | | | |
| | | 1. अशौचलक्षणं , अशौचशब्दार्थः तद्भेदाश्च | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 2. जननाशौचं , मरणाशौचम् | 1 | 1 | 16-20 |
| 3. आशौचे कृत्याकृत्यविचारः | 1 | 1 | 16-20 | | |
| 4. आशौचे शुद्धिविचारः | 1 | 1 | 16-20 | | |
| | | सन्दर्भग्रन्थाः – | | | |
| | | 1. याज्ञवल्क्यस्मृतिः- विज्ञानेश्वरकृतमिताक्षराटीकोपेता, नागप्रकाशनम् । 2. शुद्धिसारः – प्रो.जयकृष्णमिश्रः (सम्पादकः) 3. प्रायश्चित्तविवेकः-शूलपाणि-पं.कुलमणिमिश्रः (सम्पादकः) 4. याज्ञवल्क्यस्मृतेः प्रायश्चित्ताध्यायः -सम्पादकः-डॉ. कमलनयनशर्मा । | | | |
| | | फलतांशः –आशौचे कालस्नानाद्यपनोद्यः पिण्डोदकदानादिविधेरध्ययनादिपर्युदास इति ज्ञायते । | | | |

| | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|
| | | | पाठ्यक्रम अध्ययन की योग्यता –शास्त्रिचतुर्थसत्रार्द्ध | | | |
| | | | पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रविधि (बोधन प्रक्रिया) –व्याख्यानविधि, दण्डान्वयविधि, खण्डान्वयविधि,मूल्याङ्कनविधि । | | | |
| | | | सङ्गति –पूर्ववर्ती पाठ्यांश आशौचविषयका पश्चातवर्ती पाठ्यांशसंस्कारविषयोंसे अन्तः सम्बन्ध है । | | | |
| | | | परीक्षा का माध्यम (भाषा) -संस्कृत | | | |
| | | | परीक्षा प्रणाली –सैद्धान्तिक, प्रायोगिक | | | |
| | | | मूल्यांकन प्रक्रिया –आन्तरिक प्रक्रिया (लिखित,मौखिक) बाह्यप्रक्रिया (लिखित,प्रायोगिक) | | | |
| | | | प्रारूप प्रश्न पत्र – विश्वविद्यालय के नियमानुसार खण्ड(क) अतिलघूत्तरीय (ख) लघूत्तरीय (ग) दीर्घोत्तरीयप्रश्न | | | |

DSCC
12

षोडशसंस्काराः

पाठ्यग्रन्थः - निर्णयसिन्धुः - तृतीयपरिच्छेदस्य पूर्वार्द्धः (कमलाकरभट्टकृतः)

प्रस्तावना -संस्क्रियन्ते येन देहात्ममनांसि सः संस्कारः । संस्कारा बहुविधा यद्यपि भवन्ति, तथापि मुख्यतः षोडशसंस्काराः प्रसिद्धाः ज्ञायन्ते । संस्कारैः मानवः मानवत्वं प्राप्नोति । स्वव्यक्तित्ववर्धनं च करोति ।

उद्देश्यम् - उपनयनविवाहसंस्कारौ छात्रैः अधीतौ । अतः अन्येषां संस्काराणां प्रमुखतया ज्ञानं भवेदिति उद्देश्यम् ।

1. गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनसंस्काराः

1

1

16-20

2. जातकर्मनामकरणनिष्करणसंस्काराः

1

1

16-20

3. अन्नप्राशनचूडाकरणकर्णवेधसंस्काराः

1

1

16-20

4. विद्यारम्भकेशान्तसमावर्तनसंस्काराः

1

1

16-20

सन्दर्भग्रन्थाः-

1. मनुस्मृतिः- कुल्लूकभट्टप्रणीता, मन्वर्थमुक्तावलीटीकासहिता, मफिप्रभा हिन्दीव्याख्योपेता, हरगोविन्दशास्त्री, चौ.सं.सं, चौक -221001
2. याज्ञवल्क्यस्मृतिः - विज्ञानेश्वरकृतमिताक्षराटीकोपेता, नागप्रकाशनः, 1985
3. बौधायन-धर्मसूत्रम् - श्रीमहर्षिबौधायनप्रणीतं, डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय
4. गौतमधर्मसूत्रम्-पं.कुलमणिमिश्रः(सूक्ष्माटीकासहितं) नारायणप्रेस, पुरी ।
5. बौधायनधर्मसूत्रम् - चौखम्बा, वाराणसी, 1980
6. हिन्दुसंस्कारः - राजवलिपाण्डेय
7. पारस्करगृह्यसूत्रम् -- पं.कुलमणिमिश्रः, मार्गदर्शिनीटीकोपेताम् ।
8. संस्कारमयूखः - नीलकण्ठभट्टः
9. संस्काराणां पर्यालोचनम् - प्रो. जयकृष्णमिश्रः

| | | |
|--|--|--|
| | | 10.संस्कारविमर्शः -प्रो.भगवती सुदेश,जयपुरम् । |
| | | फलितार्थः -संस्काराणां ज्ञानेन छात्राणां नैतिकमानवीयविकासेन सह कर्मकाण्डज्ञानं सम्भाव्यते । |
| | | पाठ्यक्रम अध्ययन की योग्यता -शास्त्रिचतुर्थसत्रार्द्ध |
| | | पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रविधि (बोधन प्रक्रिया) -व्याख्यानविधि, दण्डान्वयविधि, खण्डान्वयविधि,मूल्याङ्कनविधि । |
| | | सङ्गति -पूर्ववर्ती पाठ्यांशसंस्कारविषयों का पश्चातवर्ती पाठ्यांशगृह्यकर्मोंसे अन्तः सम्बन्ध है । |
| | | परीक्षा का माध्यम (भाषा) -संस्कृत |
| | | परीक्षा प्रणाली -सैद्धान्तिक, प्रायोगिक |
| | | मूल्यांकन प्रक्रिया -आन्तरिक प्रक्रिया (लिखित,मौखिक) बाह्यप्रक्रिया (लिखित,प्रायोगिक) |
| | | प्रारूप प्रश्न पत्र- विश्वविद्यालय के नियमानुसार खण्ड (क) अतिलघूत्तरीय (ख) लघूत्तरीय (ग) दीर्घोत्तरीयप्रश्न |